UPSC : सिविल सेवा परीक्षा

UPSC : सिविल सेवा परीक्षा

प्रारंभिक परीक्षा

सामान्य अध्ययन - I
(200 अंक / 2 घण्टा)
सामान्य अध्ययन - II
(200 अंक / 2 घण्टा)
(केवल उत्तीर्ण होना आवश्यक)

मुख्य परीक्षा

A. सामान्य अध्ययन - 1000 अंक
- सामान्य अध्ययन - I (250 Mark 3Hrs.)
- सामान्य अध्ययन - II (250 Mark 3Hrs.)
- सामान्य अध्ययन - III (250 Mark 3Hrs.)
- सामान्य अध्ययन - IV (250 Mark 3Hrs.)

B. वैकल्पिक विषय - 500 अंक
- वैकल्पिक विषय प्रश्नपत्र - I (250 Mark 3Hrs.)
- वैकल्पिक विषय प्रश्नपत्र - II (250 Mark 3Hrs.)

C. निबंध (250 Mark 3Hrs.)

D. अनिवार्य विषय - 600 अंक
(केवल उत्तीर्ण होना आवश्यक)
- अनिवार्य : अंग्रेजी (300 Mark 3Hrs.)
- अनिवार्य : भारतीय भाषा (300 Mark 3Hrs.)

साक्षात्कार

275 अंक

सिविल सेवा मुख्य परीक्षा - सामान्य अध्ययन

सा. अध्ययन-I (250 Marks 3 hrs.)
- भारतीय विरासत और संस्कृति, विश्व का इतिहास
- भारतीय समाज
- भारत एवं विश्व का भूगोल

सा. अध्ययन-II (250 Marks 3 hrs.)
- शासन व्यवस्था, संविधान एवं शासन प्रणाली
- सामाजिक न्याय
- अंतर्राष्ट्रीय संबंध

सा. अध्ययन-III (250 Marks 3 hrs.)
- आर्थिक विकास से संबंधित मुद्दे
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
- जैव-विविधता, पर्यावरण एवं आपदा प्रबंधन से संबंधित मुद्दे
- आंतरिक सुरक्षा

सा. अध्ययन-IV (250 Marks 3 hrs.)

नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा एवं अभिरूचि

GENERAL STUDIES PAPER-I

INDIAN SOCIETY

by

Dr. S. S. Pandey

Indian Society (UPSC : Syllabus)

- भारतीय समाज की मुख्य विशेषताएँ
  Salient features of Indian Society
- भारत की विविधता
  Diversity of India
- महिला एवं महिला संगठन की भूमिका
  Role of Women and women's organization
- जनसंख्या संबंधी मुद्दे
  Population and Associated Issues
- गरीबी एवं विकास संबंधी मुद्दे
  Poverty and Developmental Issues
- शहरीकरण, उनकी समस्याएँ एवं उनके उपाय
  Urbanization, their problems and their remedies
- वैश्वीकरण का भारतीय समाज पर प्रभाव
  Effects of Globalization on Indian Society
- सामाजिक सशक्तिकरण, सांप्रदायिकता, क्षेत्रवाद और धर्मनिरपेक्षता
  Social empowerment, communalism, regionalism & secularism

GENERAL STUDIES : PAPER – I

भारतीय समाज

Diversity of India

UPSC – CSE में

पूछे गए प्रश्न

- भारत में विविधता के किन्हीं चार सांस्कृतिक तत्वों का वर्णन कीजिये और एक राष्ट्रीय पहचान के निर्माण में उनके आपेक्षिक महत्व का मूल्य निर्धारण कीजिये। UPSC - 2015

Describe any four cultural elements of diversity in India and rate their relative significance in building a national identity. UPSC - 2015

- वैश्वीकरण ने भारत में सांस्कृतिक विविधता के आंतरक (कोर) को किस सीमा तक प्रभावित किया है? स्पष्ट कीजिए। UPSC – 2016

To what extent globalization has influenced the core of cultural diversity in India? Explain. UPSC - 2016

- भारत की विविधता के संदर्भ में, क्या यह कहा जा सकता है कि राज्यों की अपेक्षा प्रदेश सांस्कृतिक इकाईयों को रूप प्रदान करते हैं? अपने दृष्टिकोण के लिए उदाहरणों सहित कारण बताइए। UPSC - 2017

In the context of diversity of India, can it be said that the regions form cultural units rather than the States? Give reasons with examples for your viewpoint. UPSC - 2017

- 'आम तौर पर कहा जाता है कि वैश्वीकरण सांस्कृतिक समांगीकरण को बढ़ावा देता है, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि भारतीय समाज में उसके कारण सांस्कृतिक विशिष्टताएँ सुदृढ़ हो गई हैं।' सुस्पष्ट कीजिये। UPSC – 2018

'Globalization is generally said to promote cultural homogenization but due to this cultural specificities appear to be strengthened in the Indian Society,' Elucidnte. (250 words) UPSC - 2018

- क्या हमारे राष्ट्र में सर्वत्र लघु भारत के सांस्कृतिक क्षेत्र हैं? उदाहरणों के साथ सविस्तार स्पष्ट कीजिए। (250 शब्द) UPSC – 2019

Do we have cultural pockets of small India all over the nation ? Elaborate with examples (250 words) UPSC - 2019

- क्या हम वैश्विक पहचान के लिए अपनी स्थानीय पहचान को खोते जा रहे हैं? चर्चा कीजिए। (250 शब्द) UPSC – 2019

Are we losing our local identity for the global identity? Discuss. (250 words) UPSC - 2019

- बहु-सांस्कृतिक भारतीय समाज को समझने में क्या जाति की प्रासंगिकता समाप्त हो गयी है? उदाहरणों सहित विस्तृत उत्तर दीजिए। (150 शब्द) UPSC - 2020

Has caste lost its relevance in understanding the multi-cultural Indian Society? Elaborate your answer with illustrations. (150 words) UPSC - 2020

- क्या भारत में विविधता एवं बहुलवाद वैश्वीकरण के कारण संकट में हैं? औचित्यपूर्ण उत्तर दीजिए। (250 शब्द) UPSC - 2020

Is diversity and pluralism in India under threat due to globalisation? Justify your answer. (250 Words) UPSC - 2020

- भारत के जनजातीय समुदायों की विविधताओं को देखते हुए किस विशिष्ट सन्दर्भ के अन्तर्गत उन्हें किसी एकल श्रेणी में माना जाना चाहिए। (150 शब्द में उत्तर दें) UPSC – 2022

Given the diversities among tribal communities in India, in which specific contexts should they be considered as a single category? (Answer in 150 words)
UPSC - 2022

UPSC – CSE में पूछे गए प्रश्न

भारत में क्षेत्रवाद

- प्रादेशिकता की बढ़ती हुई भावना, पृथक् राज्य की माँग का प्रमुख कारण है। विवेचना कीजिए। UPSC – 2013

Growing feeling of regionalism is an important factor in the generation of demand for a separate state. Discuss.
UPSC - 2013

- प्रादेशिकता का क्या आधार है? क्या ऐसा प्रादेशिक स्तर पर विकास के लाभों के असमान वितरण से हुआ, जिसने कि अंततः प्रादेशिकता को बढ़ावा दिया? अपने उत्तर को पुष्टि कीजिए। UPSC – 2016

What is the basis of regionalism? Is it that unequal distribution of benefits of development on regional basis eventually promotes regionalism? Substantiate your answer. **UPSC - 2016**

- क्या आप सहमत हैं कि भारत में क्षेत्रीयता बढ़ती हुई सांस्कृतिक मुखरता का परिणाम प्रतीत होती है? तर्क कीजिए। (150 शब्द) UPSC - 2020

Do you agree that regionalism in India appears to be a consequence of rising cultural assertiveness? Argue. (150 words) **UPSC - 2020**

Dr. S. S. Pandey

TOPIC

भारत में विविधता

Diversity in India

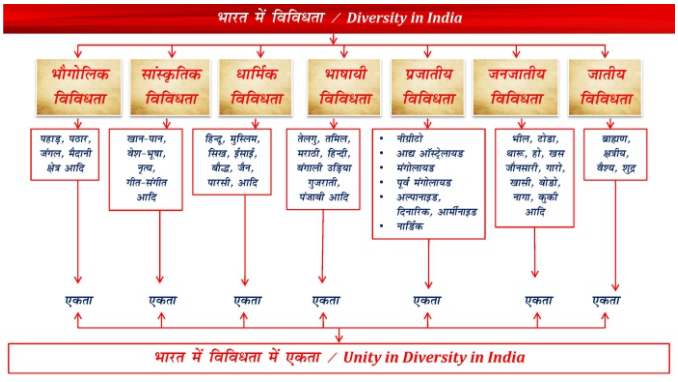

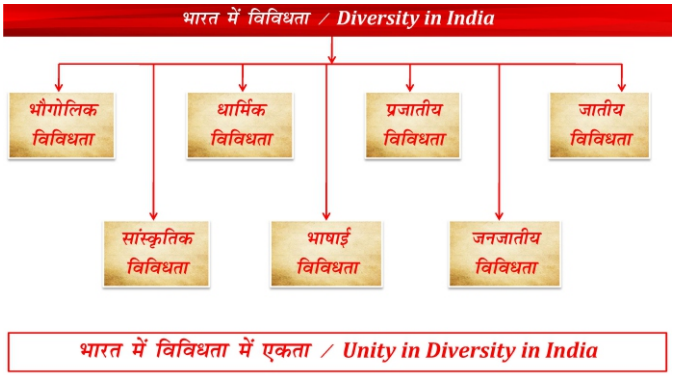

भौगोलिक विविधता Geographical Diversity

1. उत्तर भारत का पर्वतीय प्रदेश (Mountain Region of North India)
2. उत्तर भारत का मैदानी क्षेत्र (Plain Area)
3. दक्षिण का पठारी प्रदेश (Plateau Region)
4. राजस्थान का मरुस्थल (Desert)
5. समुद्रतटीय मैदान (Coastal Plain)

सांस्कृतिक विविधता / Cultural Diversity

1. खान-पान (Food and Drink) संबंधी विविधता
2. वेश-भूषा (Uniform) संबंधी विविधता
3. नृत्य कला (Dance) संबंधी विविधता
4. गीत-संगीत (Songs and Music) संबंधी विविधता
5. पर्व एवं त्योहार (Festivals) संबंधी विविधता
6. मूर्तिकला एवं वास्तुकला (Sculpture and Architecture) संबंधी विविधता
7. विचारधारा (Ideology) संबंधी विविधता

धार्मिक विविधता / Religious Diversity

1. हिन्दू- 1. वैष्णो, 2. शैव, 3. शाक्त
2. मुस्लिम- 1. सिया, 2. सुन्नी
3. सिख- 1. निरंकारी, 2. राधा स्वामी, 3. नामधारी
4. ईसाई- 1. कैथोलिक, 2. प्रोटेस्टेन्ट
5. बौद्ध- 1. स्थविर, 2. महासंधिक
6. जैन- 1. दिगम्बर, 2. श्वेताम्बर
7. पारसी

भाषाई विविधता Linguistic Diversity

1. इण्डो-यूरोपीयन भाषाई परिवार (आर्य)
2. द्रविड़ भाषाई परिवार
3. ऑस्ट्रिक भाषाई परिवार
4. साइनो तिब्बती भाषाई परिवार

प्रजातीय विविधता Racial Diversity

1. नीग्रीटो
2. आद्य ऑस्ट्रेलायड
3. मंगोलायड
4. पूर्व मंगोलायड
5. अल्पानाइड, दिनारिक, आर्मीनाइड
6. नार्डिक

जनजातीय विविधता Tribal Diversity

1. उत्तर भारत की जनजातियाँ
2. मध्य भारत की जनजातियाँ
3. दक्षिण भारत की जनजातियाँ
4. उत्तर-पूर्व भारत की जनजातियाँ

जातीय विविधता Caste Diversity

1. ब्राह्मण
2. क्षत्रीय
3. वैश्य
4. शूद्र

Dr. S. S. Pandey

TOPIC

क्षेत्रीय विविधता

Regional Diversity

Dr. S. S. Pandey

TOPIC

वैश्वीकरण का भारत की सांस्कृतिक विविधता पर प्रभाव

Impact of Globalization on the Cultural Diversity of India

1. **वैश्वीकरण:**

तार्किक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का तीव्र विकास और आधुनिकता के मूल्यों का तीव्र प्रसार–

फलतः भारतीयों में परंपरागत संस्कृति को छोड़कर आधुनिक बनने की प्रवृत्ति तीव्र एवं आधुनिक समाज का निर्माण–

फलतः भारतीय समाज की विविधता कमजोर

2. **वैश्वीकरण:**

पश्चिमीकरण एवं वैश्विक संस्कृति का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव–

फलतः एक वैश्विक संस्कृति का निर्माण–

फलतः भारतीय समाज की विविधता कमजोर

3. **वैश्वीकरण:**

यातायात एवं संचार क्रांति तथा बाजार अर्थव्यवस्था का विकास–

फलतः स्थानीय संस्कृति का भारतीयकरण और एक संश्लेषित भारतीय संस्कृति का निर्माण–

फलतः भारतीय समाज की विविधता कमजोर

4. **वैश्वीकरण:**

पहचान का संकट–

फलतः लोगों का अपने नृजातीय तत्वों एवं परंपरागत संस्कृति को पुनः अपनाया जाना–

फलतः भारतीय समाज की विविधता पुनः मजबूत

समीक्षा (Review)

स्पष्ट है, वैश्वीकरण की वर्तमान प्रक्रिया ने कई रूपों में, एक संश्लेषित संस्कृति (Synthetic Culture) का निर्माण करके भारतीय संस्कृति की विविधता को कमजोर किया है तो दूसरी तरफ पहचान के संकट के रूप में इसकी विविधता को पुनःस्थापित करने का प्रयास भी किया है।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि, भारतीय समाज की विविधता पर वैश्वीकरण का नकारात्मक प्रभाव संक्रमणकालीन अवस्था (Transitional Stage) का प्रभाव अधिक है, जहाँ छद्म आधुनिकता (Pseudo Modernity) का विकास हो रहा है,

परन्तु आधुनिकता के परिपक्व स्तर पर, बिना सांस्कृतिक विखण्डन के भी आधुनिक समाज का निर्माण संभव है और भारतीय समाज की विविधता बनी रह सकती है। (उदाहरण–जापान)

अतः निष्कर्ष है कि –

वैश्वीकरणजनित प्रभाव निश्चित रूप से भारतीय विविधता को कमजोर कर रहे हैं, लेकिन इसके आधार पर विविधता के पूर्णतः समाप्त होने की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है,

क्योंकि भारतीय संस्कृति में अनुकूलनशीलता की अद्भुत क्षमता रही है जिसने हजारों वर्षों से विविधता को कायम रखा है और आगे भी यह, थोड़े बहुत परिवर्तनों के साथ बनी रहेगी।

Dr. S. S. Pandey

TOPIC

भारत में विविधताजनित चुनौतियाँ / समस्याएँ

Diversity Generated Challenges / Problems in India

TOPIC : भारत में विविधताजनित चुनौतियाँ / समस्याएँ

- भूमिका
- कारण
- विविधताजनित चुनौतियाँ / समस्याएँ
- मूल्यांकन एवं सुझाव

विविधताजनित चुनौतियाँ / समस्याएँ

Diversity Generated Challenges / Problems

1. नृजातीय विविधता (Ethnic Diversity) (सांस्कृतिक विविधता और जनजातीय विविधता):

   क्षेत्रवाद, अलगाववाद, बाहरी लोगों का विरोध आदि की समस्या

2. धार्मिक विविधता (Religious Diversity):

   साम्प्रदायवाद, धार्मिक संघर्ष, धार्मिक आंतकवाद आदि की समस्या

3. भाषाई विविधता (Linguistic Diversity):

   भाषावाद तथा भाषाई पहचान को लेकर आंदोलन एवं संघर्ष आदि की समस्या

4. जातीय विविधता (Caste Diversity):

   जातिवाद तथा जाति संघर्ष एवं नरसंहार आदि की समस्या

5. प्रजातीय विविधता (Race Diversity):

   प्रजातीय भेद-भाव एवं प्रजातीय आधार पर हिंसा एवं अलगाववाद आदि की समस्या

भारत में विविधिताजनित समस्याओं के कारण

Causes of Diversity Generated Problems in India

1. गरीबी, विषमता एवं वंचन
2. उपभोक्तावाद के साथ महत्वाकांक्षा में वृद्धि एवं व्यक्तिवाद में वृद्धि
3. वैश्वीकरणजनित पहचान का संकट एवं नृजातीयता में वृद्धि
4. स्वार्थी व्यक्ति, स्वार्थी संगठन एवं स्वार्थी राजनीतिक दलों की भूमिका
5. विदेशी शक्तियों की भूमिका

मूल्यांकन एवं सुझाव

(Evaluation and Suggestions)

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि–

उपरोक्त समस्याओं के लिए भारतीय समाज की विविधता नहीं, बल्कि अन्य कारण उत्तरदायी रहे हैं, जो विविधताओं के साथ संयुक्त होकर उपरोक्त समस्या को उत्पन्न करते रहें हैं।

इसलिए जरूरत है, उन अन्य कारणों को दूर करने की, तभी विविधता में एकता के आदर्श के साथ एक विकसित समरस भारत का निर्माण किया जा सकता है।

Dr. S. S. Pandey

TOPIC

भारत में क्षेत्रवाद की समस्या

Problems of Regionalism in India

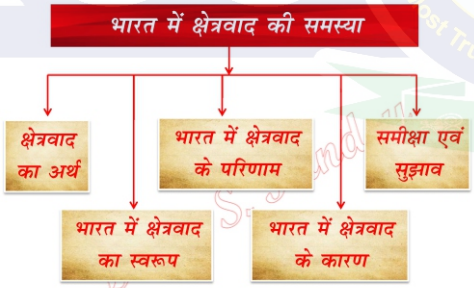

क्षेत्रवाद का अर्थ

(Meaning of Regionalism)

वृहद् अर्थों में,

किसी क्षेत्र विशेष के साथ, वहाँ के लोगों में लगाव की भावना क्षेत्रवाद (Regionalism) कहलाता है।

(क्षेत्रवाद का सकारात्मक संदर्भ)

विशिष्ट अर्थों में,

किसी क्षेत्र विशेष के साथ, वहाँ के लोगों में अंधलगाव (Blindness) की भावना को क्षेत्रवाद कहा जाता है।

(क्षेत्रवाद का नकारात्मक संदर्भ)

भारत में क्षेत्रवाद का स्वरूप

Form of Regionalism in India

1. बहुप्रादेशिक क्षेत्रवाद *(Multi-state Regionalism)*
2. अंतर प्रादेशिक क्षेत्रवाद *(Inter-state Regionalism)*
3. अंत:प्रादेशिक क्षेत्रवाद *(Intra-state Regionalism)*
   - पृथकतावाद / अलगाववाद *(Separatism)*
   - स्वायत्ता *(Autonomy)* की माँग
   - पृथक राज्य *(Separate State)* की माँग

भारत में क्षेत्रवाद के परिणाम

Consequences of Regionalism in India

1. राष्ट्रीयता एकता एवं अखंडता को खतरा
2. जान-माल की हानि
3. आर्थिक विकास दुष्प्रभावित
4. सामाजिक सौहार्द्धता कमजोर
5. राष्ट्रवाद की भावना कमजोर
5. विधि-व्यवस्था को चुनौती एवं अपराध में वृद्धि

भारत में क्षेत्रवाद के कारण

Causes for Regionalism in India

1. नृजातीय विविधता *(Ethnic Diversity)* *(सहायक कारण)*
2. गरीबी, बेरोजगारी एवं अशिक्षा
3. वैयक्तिक विषमता, क्षेत्रीय विषमता एवं वंचन
4. पहचान-संकट एवं नृजातीयता *(Ethnicity)* में वृद्धि
5. उपभोक्तावाद, महत्वाकांक्षा में वृद्धि एवं व्यक्तिवाद *(Individualism)* में वृद्धि
6. स्वार्थी व्यक्ति, स्वार्थी संगठन एवं स्वार्थी राजनैतिक दलों की भूमिका
7. विदेशी शक्तियों की भूमिका

समीक्षा एवं सुझाव

Evaluation and Suggestions

1. निश्चित रूप से क्षेत्रवाद के परिणाम सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों रहें हैं
2. नृजातीय विविधता स्वयं में क्षेत्रवाद का कारण नहीं, बल्कि अन्य कारण अधिक महत्वपूर्ण
3. विविधता को समाप्त करना अव्यावहारिक एवं संविधान के विपरीत
4. अन्य कारकों को दूर करके क्षेत्रवाद की समस्या का समाधान संभव